क्या जीवन में बुराई की उपस्थिति यह दर्शाती है कि अल्लाह नहीं है ?

अल्लाह के अस्तित्व को नकारने के बहाने के रूप में इस सांसारिक जीवन में बुराई के अस्तित्व के कारण के बारे में प्रश्न करने वाला, हमारे सामने अपनी अदूरदर्शिता, उसके पीछे की हिकमत के संबंध में अपने विचार की कमज़ोरी और अंतरतम चीजों के बारे में जागरूकता की कमी को प्रकट करता है। जबकि नास्तिकों ने भी अपने प्रश्न के ज़िम्न में यह स्वीकार किया है कि बुराई एक अपवाद है।

इसलिए, बुराई के पीछे छुपी हिकमत के बारे में पूछने से पहले, इससे भी अधिक यथार्थ प्रश्न पूछना चाहिए था कि "सबसे पहले भलाई कैसे पाई गई ?"

इसमें किसी तरह का कोई संदेह नहीं है कि जो प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है, उससे शुरूआत करनी चाहिए कि भलाई को किसने पैदा किया है ? हमें शुरुआती बिंदु या मूल या प्रचलित सिद्धांत पर सहमत होना चाहिए। उसके बाद हम अपवादों के कारण ढूंढ़ सकते हैं।

वैज्ञानिक शुरुआत में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान के निश्चित और विशिष्ट नियम स्थापित करते हैं, फिर उन नियमों के अपवादों और विसंगतियों का अध्ययन किया जाता है। इसी तरह, नास्तिक केवल उसी समय बुराई के उद्भव की परिकल्पना को दूर कर सकते हैं, जब वे शुरू में असंख्य सुंदर, व्यवस्थित और अच्छी घटनाओं से भरी दुनिया के अस्तित्व को स्वीकार करें।

इसी तरह औसत जीवन में स्वास्थ्य की अवधि और बीमारी की अवधि की तुलना के द्वारा, या दशकों की समृद्धि और उन्नति और तबाही और विनाश की प्रतिकूल अवधियों की तुलना के द्वारा, इसी प्रकार प्रकृति की सदियों की शांति और स्थिरता और ज्वालामुखियों और भूकंपों के प्रतिकूल विस्फोट की तुलना के द्वारा हम इस तथ्य तक पहुंच सकते हैं कि शुरू से फैली हुई भलाई कहाँ से आई ? अराजकता और संयोग पर आधारित दुनिया एक अच्छी दुनिया का निर्माण नहीं कर सकती।

प्रतिकूल बात यह है कि वैज्ञानिक प्रयोग इसकी पुष्टि करते हैं। ऊष्मप्रवैगिकी के दूसरे नियम में कहा गया है कि बिना किसी बाहरी प्रभाव के एक पृथक प्रणाली में कुल एन्ट्रापी (विकार या यादृच्छिकता की डिग्री) हमेशा बढ़ेगी और यह प्रक्रिया अपरिवर्तनीय है।

दूसरे शब्दों में, संगठित चीजें हमेशा ढहती और लुप्त होती रहेंगी, जब तक कि बाहर से कोई चीज़ उन्हें एकत्र न करे। इसी तरह, अंधे उष्मागतिक बल कभी भी अपने आप में कुछ भी अच्छा नहीं बना सकते थे, न बड़े पैमाने पर अच्छे हो सकते थे, जैसा कि वे हैं, जब तक कि सृष्टिकर्ता इन यादृच्छिक चीज़ों को संगठित न करता जो अद्भुत चीजों में प्रकट होती हैं जैसा कि ख़ूबसूरती, हिकमत, ख़ुशी और मुहब्बत। यह केवल यह प्रमाणित करने के लिए है कि असल भलाई है और बुराई अपवाद है, और यह कि एक माबूद है जो सक्षम है, सृष्टिकरता है, स्वामी है और प्रबंधक है।

Source: https://the-faith.com/qa/hi/show/119/
Arabic Source: https://the-faith.com/qa/ar/show/119/
Monday 1st of June 2026 09:33:05 PM